

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन

Shri Ramchandra Kripalu Bhaju Man

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन गोस्वामी तुलसीदास की पाँच छंदों की राम-स्तुति है, जो उनकी विनय पत्रिका का पद ४५ है। इसमें तुलसीदास अपने मन से कहते हैं कि संसार के दारुण भय को हरने वाले कृपालु श्रीराम का भजन कर, और उनके कमल जैसे नेत्रों, मेघ-श्याम शरीर और पीताम्बर का वर्णन करते हैं। इसे राम नवमी और दीपावली पर, भजन संध्याओं में, सुंदरकांड और रामायण पाठ के बाद और रोज़ की संध्या-प्रार्थना में गाते हैं।

छंद १

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुण ।

नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुण ॥१॥

हे मन, कृपालु श्रीरामचन्द्रजी का भजन कर, जो संसार के दारुण भय को हरने वाले हैं। उनके नेत्र नव-विकसित कमल के समान हैं, और मुख, हाथ तथा चरण लाल कमल के समान हैं।

छंद २

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुंदर ।

पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥२॥

उनकी छवि असंख्य कामदेवों से बढ़कर है; वे नवीन नीले जलभरे मेघ के समान सुंदर हैं। उनका पीताम्बर मानो मेघ में बिजली-सा चमक रहा है। ऐसे पावन जानकीपति को मैं नमस्कार करता हूँ।

छंद ३

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदन ।

रघुनंद आनंदकंद कोसलचंद दशरथ नंदनं ॥३॥

हे मन, उनका भजन कर जो दीनों के बंधु हैं, सूर्य के समान तेजस्वी हैं और दानव-दैत्यों के वंश का नाश करने वाले हैं; जो रघुकुल के आनंद, आनंद के मूल, कोसल-देश रूपी आकाश के निर्मल चंद्रमा और दशरथ के पुत्र हैं।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषण ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषण ॥४॥

उनके मस्तक पर मुकुट, कानों में कुण्डल, माथे पर सुंदर तिलक और अंग-अंग में भव्य आभूषण हैं। उनकी भुजाएँ घुटनों तक लंबी हैं, वे धनुष-बाण धारण किए हैं और उन्होंने संग्राम में खर-दूषण को जीता है।

समापन

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजन ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजन ॥

तुलसीदास इस प्रकार कहते हैं: हे शिव, शेष और मुनियों के मन को आनंदित करने वाले, काम आदि दुष्ट शत्रुओं के समूह का नाश करने वाले प्रभु, आप मेरे हृदय-कमल में निवास कीजिए।

स्रोत: Vinaya Patrika of Goswami Tulsidas, pada 45 (Raga Gauri), Gita Press Gorakhpur edition with Hindi bhavarth, as scanned on Hindi Wikisource (विनय पत्रिका.djvu, pages 79–80); cross-checked against Hindi Wikipedia and BhaktiBharat.com

ये अर्थ हमारा पहला मसौदा हैं। अभी किसी विद्वान ने इनकी जाँच नहीं की है। कोई भूल दिखे तो हमें ज़रूर बताएँ।

getnitya.com/hi/ram/shri-ramchandra-kripalu/